पाठ 5

4PH3C6

निजभाषा उन्नति

(प्रस्तुत पाठ में कवि ने स्वाभिमान और देश-प्रेम की भावना के विकास के लिए अपनी मातृभाषा के विकास पर बल दिया है। साथ ही राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए परस्पर मिलजुल कर रहने का संदेश दिया है।)

(दोहे)

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।।

करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु शूल।

निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जो सब को मूल।।

प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि जत्न।

राज काज दरबार में, फैलावहु यह रत्न।।

सुत सो तिय सो मीत सो, भृत्यन सो दिन रात।

जो भाषा मधि कीजिए, निज मन की बहु बात।।

निज भाषा निज धरम, निज मान करम व्यवहार।

सबै बढ़ावहु बेगि मिलि, कहत पुकार-पुकार।।

पढ़ो लिखो कोउ लाख विध, भाषा बहुत प्रकार।

पै जबही कछु सोचिहो, निज भाषा अनुसार।।

अंगे्रजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन।

पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।।

घर की फूट बुरी

(पद)

जगत में घर की फूट बुरी।

घर के फूटहिं सों बिनसाई सुबरन लंकपुरी।।

फूटहिं सों सत कौरव नासे भारत युद्ध भयो।

जाको घाटो या भारत में अबलौं नहिं पुजयो।।

फूटहिं सो जयचन्द बुलायो जवनन भारत धाम।

जाको फल अब लौं भोगत सब आरज होइ गुलाम।।

फूटहि सों नवनन्द विनासो गयो मगध को राज।

चन्द्रगुप्त को नासन चाह्यो आपु नसे सह साज।।

जो जग में धन मान और बल अपुनी राखन होय।

तो अपुने घर में भूले हू फूट करौ जनि कोय।।

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

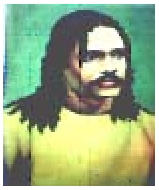

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी का जन्म 9 सितम्बर सन् 1850 ई0 को वाराणसी में हुआ था। भारतेन्दु जी ने निबन्ध, नाटक, कविता आदि की रचना की। आपको आधुनिक काल का जन्मदाता कहा जाता है। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ 'प्रेम माधुरी', 'प्रेम फुलवारी', 'भक्तमाल' हैं। इन्होंने खड़ी बोली में गद्य लिखा और गद्य लिखने के लिए लोगों को उत्साहित किया। ये अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। 35 वर्ष की अल्पायु में ही 6 जनवरी सन् 1885 ई0 को इनकी मृत्यु हो गयी।

शब्दार्थ

मूल = आधार। **शूल** = पीड़ा। **बिलम्ब** = देर। **जत्न** = यत्न, प्रयास। **भृत्यन** = सेवकों। **मधि** = बीच में। **बेगि** = शीघ्र। **प्रवीन** = कुशल। **हीन** = अधूरा, रहित। **बिनसाई** = नष्ट हुई। **पुजयो** = पूरा हुआ। **जवन** = यवन। **आरज** = आर्य।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1.निम्नांकित स्थितियों पर छोटे समूहों में चर्चा कीजिए और निष्कर्ष को पाँच-सात पंक्तियों में लिखिए-

(क) ऐसा घर जिसमें सब मिलकर कार्य करते हैं।

(ख) ऐसा घर जिसमें फूट है।

2.कवि ने फूट के कारण होने वाले विनाश के अनेक उदाहरण दिए हैं, यथा-

(क) रावण और विभीषण की फूट के कारण लंका का नाश।

(ख) कौरव और पाण्डवों की फूट के फलस्वरूप महाभारत युद्ध।

(ग) पृथ्वीराज और जयचन्द की आपसी फूट के कारण यवनों का भारत आगमन।

इन विषयों पर शिक्षक/शिक्षिका के साथ चर्चा करके फूट के कारण और उनके दुष्परिणामों को संक्षेप में लिखिए।

3. इस कविता के आधार पर आप भी दो सवाल बनाइए।

विचार और कल्पना

1. यदि आपको अपनी बात हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में कहने के लिए कहा जाय, तो आप किस भाषा को चुनेंगे ?

कविता से

1. निज भाषा की उन्नति से क्या-क्या लाभ होगा ?

2. हमें अपनी भाषा का प्रसार कहाँ-कहाँ करना चाहिए ?

3. कवि ने अपनी भाषा के अतिरिक्त किसको-किसको बढ़ाने की बात की है ?

4. कवि ने महाभारत के युद्ध का क्या कारण बताया है ?

5. निम्नांकित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।

(ख) जो जग में धन मान और बल अपुनी राखन होय।

तो अपुने घर में भूले हू फूट करौ जनि कोय।।

भाषा की बात

1. शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

करम, जदपि, सुबरन, हिय, जल, मीत, धरम।

2. निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को शूल।।

उपर्युक्त पंक्तियों में आये हुए 'मूल' और 'शूल' शब्द तुकान्त शब्द हैं। कविता से ऐसे ही तुकान्त शब्द छाँटकर उन शब्दों के आधार पर कुछ पंक्तियाँ रचिए।

3-इस कविता से मैंने सीखा....................................।

4-अब मैं करूँगा/करूँगी..।

इसे भी जानें

महात्मा गांधी- "राष्ट्र भाषा की जगह एक हिन्दी ही ले सकती है, कोई दूसरी भाषा नहीं।"

सुमित्रानंदन पंत- "हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है वह विश्व की सांस्कृतिक भाषा होगी।"

विनोबा भावे- "भारत की एकता के लिए आवश्यक है कि देश की सभी भाषाएँ नागरी लिपि अपनाएँ।"

सुभाषचन्द्र बोस- “प्रान्तीय ईष्र्या-द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी-प्रचार से मिलेगी उतनी दूसरी चीज से नहीं।”

राजर्षि टण्डन- “हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और दृढ़ करती है।”

डॉ0 जाकिर हुसैन- “हिन्दी की प्रगति से देश की सभी भाषाओं की प्रगति होगी।”